International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 3 || March 2026 || PP. 69-72

शौर्यक भूमि : चुशूल

अर्चना कुमारी
शोधार्थी
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग
ल.ना.मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

डॉ. सुनीता झा
शोध–निर्देशिका
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग
मिल्लत कॉलेज, दरभंगा

सारांश :

मैथिली साहित्य विविध विधा सम्पन्न अछि । जहिना कविता, कथा, उपन्यास आदि विधा मैथिलीमे मान्य अछि तहिना 'यात्रा साहित्य' विधा सेहो मान्य अछि। आनविधा जकाँ समृद्ध नहि रहितहुँ यात्रा साहित्य अपन विशिष्टताक कारणे ँ, विशिष्ट स्थान प्राप्त कऽ चुकल अछि । कतिपय साहित्यकार अपन यात्रा वृत्तांत लिखने छथि । 'लोहना रोडसँ लास वेगस' यात्रा वृत्तांत छनि कीर्तिनाथ झाक जाहिमे भारत–चीन लद्दाखक सीमावर्ती क्षेत्रक शौर्यभूमि चुशूलक महत्वक दर्शन करबैत यात्रा वर्णन कयने छथि ।

बीज बिन्दू : *शौर्यभूमि, चुशूल, यात्रा–वृत्तांत, यात्रा साहित्यक महत्व*

प्रस्तावना :

1950 ई.क दशक मैथिली साहित्यमे अविस्मरणीय रहत । एहि दशकमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन आ ताही संग एक नवीन विधा यात्रा–साहित्यक उदय, मैथिली साहित्यक क्षितिज पर भेल । एहि शताब्दीक उदित भेलासँ यात्रा–साहित्यमे लेखन रफ्तार पकड़लक । कतिपय पत्र–पत्रिकामे यात्रा वर्णन दृश्यमान होअय लागल। यात्रा–वृतांतक कतिपय पोथी प्रकाशन–पथपर अग्रसर भेल । मुदा एकर बावजूदो अन्य विधाक अपेक्षा झुझुआने रहल । जखन कि पाठक वर्गके ँ एकहि ठाम इतिहास, भूगोल आ सामाजिक परिस्थिति सँ साक्षात्कार भऽ गेल करैत छनि । बैसले–बैसल ओ देश–दुनियाँसँ परिचय स्थापित कऽ लैत छथि । जनिका विदेश परिभ्रमणक अवसर नहि भेटि पबैत छनि किंवा सम्पूर्ण भारतक विशिष्ट भू–भाग धरि पहुँचब असम्भव प्रतीत होइत छनि ओहो यात्रा–साहित्यक माध्यमसँ ओहि स्थलक दर्शन कऽ लेल करैत छथि।

एहि क्रमके ँ सम्पुष्टि दैत 2020 ई.मे प्रकाशित कीर्तिनाथ झाक 'लोहना रोडसँ लास वेगस' नामक यात्रा साहित्यक पोथी समक्ष अबैत अछि । एहि पोथीक अन्तर्गत एहि शौर्यभूमि चुशूलक यात्रा–वर्णन कएल गेल अछि । चुशूल भारत–चीन सीमावर्ती क्षेत्र लद्दाखक अन्तर्गत अबैत अछि । ई लद्दाखक एक गोट दूरस्थ गाँव थिक। लद्दाखक मुख्य आकर्षक झील 'पेंगोंग–सो' चुशूलक एकदम नजदीक अछि । पेंगोंग–सो झील हिन्दी फिल्मक परदा पर अक्सरहाँ देखबामे अबैत अछि । एहि झीलक अवर्णनीय शोभाके ँ देखबाक लेल पर्यटकक भीड़ लागल रहैत छैक । पेंगोंग झील लेहसँ जाएब सोझ बाट नहि अछि । जाड़क मासमे हिमपात भेलापर जखन चांगला पासवला रस्ता बंद भऽ जाइत अछि पेंगेंग–सो झील देखबाक लेल उत्सुक यायावर लोकनि चुशूलक बाटें पहुँचैत छथि । 1962 ई.मे जखन भारत–चीन युद्ध भेल ओहि समय चुशूल भारतीय सेनाक शौर्यक इतिहास गढ़बामे प्राइम स्थानपर रहल । एकर सामरिक महत्व चुशूंल हवाइ पट्टी आ चुशूल–दुंगती–लेह मार्गक कारण भारतीय वीर सेनाक समक्ष आवागमन अवरुद्ध नहि भेल । जाहिसँ भारतीय सेना अंत धरि अपन नियंत्रण बनौने रहल । जाहि कारणे ँ चीन ओहि सैन्यपथके ँ अवरुद्ध करबामे सफल नहि भऽ सकल । एहि सड़कक सामरिक महत्त्व छैक । चांगला–दर्रापर बर्फवारीक कारण जखन सभ रास्ता अवरुद्ध भऽ जाइत छैक, तहू स्थितिमे ई बाट आवागमन लेल ठीक–ठाक रहैए । चीन एही कारणे ँ लद्दाखक एहि बाटके ँ छेकय चाहैत छल । जाहिसँ सैनिक आ सैन्यवाहन अपन अन्तिम सीमा धरि नहि पहुँचैक आ ओ अपन साम्राज्य–विस्तार आसानीसँ कऽ सकय । एहि बाटक महत्वके ँ लेखक अपन यात्रा–वृतांतमे निम्न रूपे ँ कहलनि अछि– ''कारू सैनिक मुख्यालयक आगू सड़क दू दिस भऽ जाइछ । बामाकातक सड़क शक्ति जिंगराल आ चांगला पास होइत दुर्बुख आ तांगसे सैनिक छावनी होइत पेंगोंग–झील धरि जाइछ । दहिना कातक सड़कसँ एकटा बाट हिमालय दिस फुटइछ आ सीधा सड़क किआरी चुमार्थाग–माहे होइत भारत–चीन सीमाक अन्तिम गाओ देमचोक धरि जाइछ । देमचोकसँ पहिने एही सड़कसँ सोमोरीरी–झील, हानले आ चुशूल आ पेंगोंग–झील धरिक बाट फुटइत छैक । मुदा पेंगोंग सो झील जेबा लेल, ई बाट घुमान भेल । मुदा चांगला–दर्रापर हिमपातक कारण जखन सोझ बाट बन्न भ' जाइत छैक, ई बाट तखनो खूजल रहैछ । इएह थिकैक एहि सड़कक सामरिक महत्व।''[1] अधिकांश युद्धभूमि सीमाक्षेत्रक दुर्गम–स्थली आ विषम परिस्थितिक बीच लड़ल जाइत अछि । सैनिक अपन प्राणाहुति दऽ देशक सीमा–रक्षा करैत अछि । पूर्वी लद्दाखक रजांग–ला स्मारक, चुशूल रणवाकुराक स्मृतिके ँ एहि ठाम जोगौने अछि । अपन शौर्यक इतिहासक पृष्ठ

एतहि फड़फड़ाइत अछि । जे दर्शनीय–स्थलक सूचीसँ बिलाएल अछि । अविस्मरणीय शौर्यक ई भूमि, भारतीय टूरिस्टक लेल धैन सन । स्वतंत्रता सँ पूर्व लद्दाखक व्यापारी सभ एही बाटसँ तिब्बत जाइत छलाह । आइ ई बाट ओहि अध्येताक प्रत्यक्ष अनुभवक बाट प्रशस्त कऽ रहल अछि जे लद्दाखक सीमाक्षेत्र 'चांगथांग' पहुँचि, पठारक भूगोल, जलवायु, जनजीवन एवं वन–सम्पदाक अध्ययन करय चाहैत होथि ।

चांगथांग– ई तिब्बती पठार सदृशे समतल बंजर पहाड़ी मरूभूमि थिक । एतुक्का वातावरण अत्यंत शुष्क अछि । भयानक ठंडा एतय पड़ैत छैक । हवा बहत तँ विहरौने दृश्य उपस्थित भऽ जाएत । गाछ–वृक्षक कत्तौ अता–पता नहि । वन्यप्राणी मरुभूमिक कारण नामहि लेल । तखन गाहे–वगोहे वनगदहा–कियांग आ हरिण–चिह्न' दृश्यमान होइछ । हरिणक चिरु प्रजाति विलुप्त हएबाक कगारपर अछि । चिड़इ–चुनमुनीक नाम पर विभिन्न रंगक खंजनि आ सारस–ब्लैक नेकड क्रेन मात्र देखबामे आओत । जतय धरि आवादीक प्रश्न उठैत अछि, ओ घासक खोजमे निकलल चलंत यायावर जे तिब्बत आ लद्दाखक क्षेत्रसँ अबैत–जाइत भेटि सकैत अछि । नदी क्षेत्र हटल–हटल । जकर किन्हेरमे खेती करब इहो सम्भव नहि । नदी ठाम–ठीक संकीर्ण, जाहि ठामक बहाव बहुत तेज आ वएह जखन चाकर–चौरस स्थल पबैत अछि, तऽ एकदम शांत आ' स्थिर भऽ जाइछ । जाहि नदीक स्थिर जल झील सदृश लागि सकैछ । एहि ठामक नदी पार करब असम्भव भऽ जाइत अछि । जखन कि ओतय उत्थर–स्थल रहलाक कारण जल–स्तर निम्न पड़ि जाइछ मुदा जलमे कनकनीक मात्रा बहुत अधिक । उर्वर भूमि मात्र ओही ठाम, जतय पहाड़क शिखरसँ खसैत जल नाला आ धार बनौने अछि । सभ जल सिंधु नदीमे मिलि जाइत अछि । प्रकृतिक अद्भुत विडम्बना एहि स्थल सभकेँ देखि, मिथिलाक एक समयक को सिकन्हाकेँ मोन पाड़ल जा सकैछ । अन्तर एतबे जे चांग–थांग पहाड़ी इलाका आ कोसिकन्हा जलीय । मुदा दुनू ठामक जनजीवन कष्टमय परिस्थितिमे । कोसिकन्हाक कवि अजित आजाद एहि विडम्बनाकेँ अपन कवितामे वर्णन करैत कहैत छथि–

''लिढ़ही पोखरिमे
दनोहीक बिध करैत काल
पानिमे उतरबाक मनोरथकेँ
डाहि देल करैत छथि
कोसिकन्हाक धी–बेटी नवकनियाँ
सरधिया खापेड़ीमे रन्हायल पाकसँ
तृप्त होइत रहैत अछि
पितरसँ बेसी पोखरि ।''[2]

चांग–थांगमे मात्र ओतहिटा जनजीवन आ मनुक्खक दर्शन हएत जाहि ठाम ई पहाड़ी–बहाव छैक । मात्र ओही ठामक क्षेत्र हरियरी देखि पबैत अछि । बाँकी जाहि ठाम जलक निकास नहि, ओहि ठाम झीले–झील देखबामे आओत । जाहि झीलमे 'पेंगोंग–झील' जे 120 कि.मी. लम्बा अछि, ताहि कारण ई झील सभ, जाहिमे दू झील, क्रमशः 'सोमोरीरी झील आ 'सो–खार' झील अबैत अछि, प्रमुख तीनू झील अपना अपनीमे विशिष्ट अछि । 'सो–खार' झीलसँ नोन निकलैत छल । जकरा तिब्बती व्यापारी बलिष्ठ तिब्बती भेंड़ी पर लादि तिब्बत लऽ जाइत छलाह । ई विशेष भेंड़ी, जकरा चांग्लुक कहल जाइत अछि, पन्द्रह किलो वजन अपन पीठपर उठा लैत अछि । एहि ठाम भेंड़ीक केश आ नोनक अदला–बदली एक विशिष्ट व्यापार छल जे भारत–तिब्बतक प्रगाढ़ सम्बंधक साक्षी रहल । बादमे एहि बाटक बंद भेला पर ई मात्र इतिहासक पृष्ठ बनि रहि गेल अछि ।

थिक्से लोह पार कएलाक बाद पहिल गाम थिक । जकर बाद 'शे' गाम अबैत अछि । जे लद्दाखक एक प्रसिद्ध गाम थिक । गाम, भारतक आत्मा बूझल जाइछ। मुदा भारतक गाम कतेको दशक दुःखक पहाड़ लदने काहि कटैत रहल अछि। कोसी क्षेत्रक दर्दुशा, वर्तमानमे ओ बरु नहि रहऽ, मुदा पूर्वक कोसीक हाल ओतुक्का बसिंदा लेखक सुभाषचन्द्र यादवकेँ ओहिना मोन छनि । ओ यात्रा–वृतांतमे लिखैत छथि–

''कोसीक पुवरिया बान्ह आबि गेल । बान्ह जे अपना भीतर लाखक लाख लोककेँ घेरि कऽ अहुँछिया कटबैत अछि । बान्ह पर एक पलक लेल ठाढ़ भऽ कऽ पच्छिम भर नजरि खिरबैत छी । दूर–दूर तक कोनो बस्ती नहि । कोनो गाछी नहि । खाली माल–जालक खूरसँ उड़ैत धूरा । बान्ह सँ हमर गाम नहि देखाइत अछि । गामक काली मंदिर देखाइत अछि । मन्दिर आइ डेढ़–दू सय बर्खसँ स्थिर अछि ।''[3] लद्दाख ई 'शे' गाम अही रूपमे देखाइत अछि । शे– एहि गामक कण–कणमे इतिहास नुकाएल अछि । छोट–मोट आवादीवला ई गाम, बरखाक अभावमे बंजर भेल पड़ल अछि । एकर माटि कतिपय पर्वतारोही आ जीव–जंतुक कंकालकेँ अपन गर्भमे रखने अछि । ओ माटिक भीतर महल, अन्न–पानि सब किछु प्रकृतिक विशाल तिजोरी मे समाहित । एकटा ऊँचगर पहाड़ पर अवस्थित एक गोट मंदिर जकर दर्शन दूरहिसँ सम्भव । किछु आगू जाकए चाकर–चौरस खूब लम्बा क्षेत्र अछि । पूर्वमे ई क्षेत्र जल–निकासीक लेल उत्तम छल हएत, मुदा आब तँ एकदम सुखाएल–टटाएल भू–क्षेत्र थिक । उब्बड़–खाबड़, जतय–ततय छोट–छोट स्तूप बौद्ध लोकनिक स्मृतिकेँ तरोताजा करैत, सामाजिक परम्पराकेँ मोन पाड़ि दैत अछि । ई स्थल बामा कात पड़ैत अछि । दहिना भागमे छोट–छोट पहाड़ी पर 'स्ताकना बिहार' अवस्थित अछि । कारू 40 कि.मी. पूब पड़ैत अछि । जतय आर्मी डिव–जीवनक मुख्यालय अछि । कारू सड़कक बहुत नजदीक सिन्धु नदी बहि रहल अछि । लद्दाखक सर्वाधिक वैभवशाली विहारक गणना

कएल जाइत 'हेमिस बौद्ध विहार' एतहि अछि । मुदा गामसँ ई दृष्टिगोचर नहि हएत आ एही कारणे ँ डोगरा सेनापति जोरावर सिंह एहि वैभवशाली विहारकें ँ लूटि नहि सकल । एतयसँ जँ–जँ पूब बढ़ब तऽ देखबैक पहाड़ी उँच्च होइत गेल अछि । जाहि कारणे तापमानक घटलासँ जाड़ बेसी लगैत छैक । चुमाथांग आ मोक आगू सिंधु घाटी काफी चाकर अछि । जतऽ–जतऽ गहींर छैक ओ सभ पहाड़ी बर्फक पघिललासँ झीलमे परिवर्तित भऽ गेल अछि । जाहिमे जल–चिड़ैक नाम पर मात्र सिल्ली भेटैत अछि । पहाड़क काते–कात लद्दाखक वनगदहा आ कियांग घास चरैत देखाएत । तिब्बत आ चीनमे वनगदहाक शिकार कएल जाइत अछि । जाहि कारणे ँ ई सभ भागि, भारतमे शरण लैत अछि ।

एहि शौर्यभूमिक ई खास विशेषता छैक जे बर्फ सँ कनकनाइत एहि सैन्य छाबनीक मध्य देशक सपूत, अपन देशक रक्षा करैत विभिन्न कष्टकें ँ सहैत, दुश्मनकें ँ ललकारैत अछि । भिड़ंत भेला मरैत आ मारैत अछि । ओहि वीर–बांकुड़ाक स्मृतिमे बनल स्मृति–स्तम्भ, किछु काल लेल यायावर लोकनिकें ँ सोचबा पर विवश कऽ दैत छनि । जनशून्य भूमिमे एहि सैनिक लोकनिक जीवन शैलीक अद्भुत दृश्य तखन उपस्थित करैत अछि, जखन कि कोनो पर्यटक ओतय पहुँचैत छथि आ सैनिक लोकनि आग्रहपूर्वक हुनका लोकनिकें ँ चाह पिअबैत छथिन । विश्वक श्रेष्ठ सभ्यतामे सिंधुघाटीक सभ्यता मानल गेल अछि । सिंधुघाटीक तलहटीमे सैन्य छावनी सभ ओहि पर्यटक लोकनिक आश्चर्यक केन्द्र बनि जाइछ, जखन ओहि दुर्गम पहाड़ीक बीच अपन सर–समाजसँ विलग, एक एहन समाजक स्थापना देखैत छथि, जकर तन–मन आ सम्पूर्ण जीवन देशकें ँ समर्पित छैक । लेखक 'हानले' सन छोट गामक चर्चा करैत एकर सामरिक महत्त्वकें ँ रेखांकित करैत कहलनि अछि जे– ''न्योमाक आगू लोमा नामक स्थानमे सिन्धुकें ँ पार करैत सड़क हानले दिस जाइछ हानले भारत–तिब्बत सीमापर एकटा छोट गाँओ थिक । मुदा हाल–सालमे एकटाविशाल वेधशाला (Indian Astronomical Observatory) निर्माणक कारण हानले अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर उभरि आयल अछि । शुष्क विरल वायु, वर्षा आ मेघ अभावे सालो भरि निर्मल आकाश, समुद्र तल सँ 12000 फुटसँ बेसीक ऊँचाइ, आ प्राकृतिक अवरोधक कारण ई स्थान Observatory लेल विशेषतः उपयुक्त अछि । एहि वेधशालाक दूरस्थ नियंत्रणक बैंगलोरक इन्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स केर हाथमे छैक । जें ँ कि हानले भारत–चीन सीमाक अत्यंत समीप अछि, तें ँ एहि स्थानक सामरिक आ सैनिक महत्व तँ छैके ।''[4]

पुवारि कातक पहाड़ पर 1962 ई.मे चीनसँ भयंकर युद्ध भेल रहय । जाहिमे चीन चुशूल उपत्यकाक सपाट मैदानकें ँ अवरुद्ध करबाक निआर कएने रहय । ओतुक्का हवाइपट्टी पर नियंत्रण करय चाहैत रहय । एहि युद्धमे वीर सैनिक लोकनि बहुत वीरताक परिचय देने रहथि । मुदा तत्कालीन सरकार युद्ध–सामग्री ओहि मात्रामे जुटा नहि पौलनि जे शस्त्र, प्रक्षेपास्त्र चीनकें ँ उपलब्ध रहैक । जाहि कारणें ँ असंख्य भारतीय सेना वरीगतिकें ँ प्राप्त कएलनि । आइ जखन भारत अपन सामरिक शक्तिकें ँ दुनियाक समक्ष प्रदर्शित करैत अछि, तऽ ओही चीनकें ँ सिट्टी–पिट्टी गुम भऽ जाइत छैक। ओहि त्रासद स्थितिक सुमार करबैत चुशूलक सैन्य स्तम्भ, मातृभूमिक प्रति अद्भुत समर्पणक दिग्दर्शनक करबैत अछि । मोन रखबाक वस्तु थिक दूर–राजक ओ विवादित इलाका, जाहि ठाम पहुँचब असम्भव अछि, मुदा भारतीय सेनाक अद्भ्य साहस आ बलिदान अपन सीमाक रक्षा करैत प्राणाहुति दैत रहल अछि । ओहि अमर बलिदानीक शौर्यक इतिहासकें ँ विस्मृत नहि कए, अपन श्रद्धा–सुमन अर्पित करैत रही । मोन रखबाक थिक जे अपन गौरवशाली देश–प्रेमक मार्मिक इतिहासकें ँ गढ़यबला ई भूमि, 1962 ई.मे रजांग–ला पहाड़ी पर चीनी आक्रमणकें ँ रोकबाक लेल कुमाऊँ रेजीमेंटक मेजर शैतान सिंहक संग छियानवे सैनिक अपन शहादत दऽ देश–प्रेमक अनुपम इतिहास लिखने रहथि । लाब–लश्करक अभावकें ँ अपन अदम्य साहसक बलपर, अभाव नहि मानि, दुश्मनक सेनाकें ँ छठिहारक दूध मोन पाड़ि देने रहथि । प्रथम आक्रमणकें ँ धत्ता बतबैत सैकड़ो चीनी सैनिककें ँ अपन राइफलक गोलीसँ घाटीमे सुता देने रहथि । पछाति चीनक सेना भागि पड़ाएल । ई ओ समय छल जखन कि प्रचण्ड जाड़सँ बचबाक लेल सैनिककें ँ कपड़ाक उचित प्रबन्ध नहि कएल गेल छल, आने बारूदक पर्याप्त व्यवस्थाए कएल गेल छल । मुदा मेजर शैतान सिंहक कुमाऊँनी सेना, अंतिम दम तक दुश्मनकें ँ मुँहतोड़ उत्तर देबाक व्रतपर अटल छल । एक दिस कुमाऊँनी रेजिमेंट एक पहाड़ीपर घात लगौने आ दोसर पहाड़ी पर गोरखा रेजीमेंटक जवान चीनी सेनाक लग अत्याधुनिक हथियार आ हवाई जहाज छलैक । ओ बमबारी आरम्भ कए देलक । मुदा मेजर शैतान सिंह अंतिम गोली धरि दुश्मनकें ँ पाठ पढ़एबाक जे मोन बना लेने छलाह सैनिकक हौसला बढ़बैत रहलाह । सैनिक बेयोनेट फाइटिंग आ हाथापाईक स्थिति धरि झुकल नहि, रूकल नहि, एक–एक चीनी सैनिककें ँ पकड़ि, पाथर पर पटकि यमलोक पहुँचाबय लागल । शैतान सिंहक शरीरमे दुश्मनक गोली पहुँचैत रहल आ ओ ओहि घावकें ँ परवाहि नहि कऽ अंतिम साँस धरि लड़ैत रहलाह । युद्ध विरामक पश्चात कुमाऊँ रेजीमेंटक पूरा ट्रुप्स आ गोरखा रेजीमेंटक नओ जवान अपन शहादत दऽ चुशूलक एहि भूमिकें ँ अलविदा कहि चुकल छलाह । पछाति भारत सरकार मेजर शैतान सिंहकें ँ सर्वोपरि सैन्य–सम्मान, परमवीर चक्रसँ सम्मानित कएलक। आ भारतीय इतिहासमे चुशूल शौर्य भूमिक रूपमे पूजित होत रहत ।

निष्कर्ष :

यात्रा वृत्तांतकें ँ मैथिली साहित्य मध्य विशिष्ट अवदान मानल जाइत अछि। यात्रा साहित्यक पाठक साहित्यकारक अँखिये ओहि स्थानक परोक्ष रूपें ँ दर्शन करैत आह्लादित होइत अछि । आनन्दक सहभागी होइत अछि । ओहि भूमिक महत्वतासँ परिचित होइत अछि, जेना एहि पोथीसँ हम शौर्यक भूमि 'चुशूल' सँ जे लद्दाख सीमावर्ती क्षेत्रमे अवस्थित अछि । एकर सामरिक महत्त्व, ओहि क्षेत्र अन्य महत्वपूर्ण तथ्यसँ अवगत भेलहुँ । यात्रा–वृत्तांत सर्वांगरूपें ँ ज्ञानवर्द्धक होइत अछि, हमरा जनैत तर्कसंगत सत्य अछि ।

संदर्भ सूची :

1. झा कीर्तिनाथ, 2020, लोहनारोडसँ लास वेगस, नेत्र चिकित्सा विभाग महात्मा गाँधी मेडिकल कॉलेज एण्ड इंस्टिच्युट पांडिचेरी, पृ. 24
2. आजाद अजित, 2020, हम कोसिकन्हाक एकटा कवि, नवारम्भ, पटना, पृ. 31
3. मेहता अशोक कुमार, 2004, तात्पर्य, जखन तखन, दरभंगा, पृ. 53
4. झा कीर्तिनाथ, 2020, लोहनारोडसँ लास वेगस, नेत्र चिकित्सा विभाग महात्मा गाँधी मेडिकल कॉलेज एण्ड इंस्टिच्युट पांडिचेरी, पृ. 24